International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(1): 18-20

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(1): 18-20
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-10-2024
Accepted: 26-11-2024

डॉ. पूजा तनेजा
सी – 118, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. पूजा तनेजा
सी – 118, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान, भारत

पौराणिक साहित्य में धर्म

डॉ. पूजा तनेजा

प्रस्तावना

सम्पूर्ण वेद कल्प रहस्य ब्राह्मण उपनिषद् इतिहास वंश पुराण सहित प्रगट हुए है इसमें ब्राह्मणभाग से पुराण पृथक् ग्रहण किया है। पुराण वेद है ऐसा शतपथ ब्राह्मण में लिखा है :–

> "एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः
> सामवेदोथर्वांगिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः।"[1]

अर्थात् गीले काष्ठ से उत्पन्न अग्नि से जिस प्रकार पृथक् – पृथक् धुँआ निकलता है ऐसे ही इस महाभूत के निश्श्वास से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वागिरस, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषदादि प्रगट हुए है यह सब ही निश्श्वासभूत है।

इतिहास और पुराण वेदों का पंचम वेद है। यह छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है।

इन वैदिक प्रमाणों के देखने से यह बात स्पष्ट जानी जाती है कि पुराण भी सनातन और नित्य तथा अपौरुषेय माने जा सकते हैं और इस समय पुराणों की रचना तथा उनके लेख से पुराणों की रचना व्यासादि महर्षियों की विदित होती है तब क्या जिनका उल्लेख वेदादि ग्रन्थों में है, वे पुराण इन पुराणों से कोई भिन्न थे, वेद जिनको पुराण कहता है, पुरातन काल में वेद ही के समान उनका आदर था इसी से पुराण पंचम वेद ही के समान उनका आदर था इसी से पुराण पंचमवेद स्वरूप में गिना गया है।

सायणाचार्य ने ऐतरेय ब्राह्मण के उपक्रम में लिखा है –

> "देवासुराः संयत्ता आसन्नित्यादयः इतिहासाः इदं वा अग्रे नैव किंचिदासीदित्याादिकं जगतः प्रागवस्थानुपक्रम्य सर्ग प्रतिपादिकं वाक्यजातं पुराणम्" [2]

अर्थात् वेद के अन्तर्गत देवासुर के युद्धवर्णन का नाम इतिहास है और पहले यह असत् था और कुछ नहीं था इत्यादि जगत् की अवस्था आरम्भ करके सृष्टिप्रक्रिया विवरण का नाम पुराण है।

इन समस्त वाक्यों से निश्चित हुआ है कि सृष्टि आदि कथन पुराणों का लक्षण है। विष्णु, ब्रह्माण्ड आदि पुराणों में लिखा है कि जिसमें पुराणों लक्षण पाये जाते हैं :–

> "सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
> वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्।।

सर्ग – सृष्टितत्त्व, प्रतिसर्ग – पुनः सृष्टि और लय, देवता और पितरों की वंशावली – सब मन्वन्तर अर्थात् किस – किस मनु का कितने समय तक अधिकार और वंशानुचरित – सूर्यचन्द्रवंशी राजाओं के वंश का वर्णन पुराण के यह पाँच लक्षण हैं।

जिस प्रकार ब्रह्मा को आदि लेकर महर्षियों के हृदय में वेदों का आविर्भाव हुआ है इस प्रकार पुराणों का भी उन्हीं महर्षियों के हृदय में ईश्वर के अनुग्रह से आविर्भाव हुआ है और महाभारत, मनु, महाभाष्य, वाल्मीकि, आश्वलायन के देखने से विदित होता है कि पुराण कितने ही हैं कल्पान्तर में पहले एक ही पुराण था और अर्थ, धर्म, काम का साधक वह सौ कोटि श्लोकों में विस्तार वाला था, उसको स्मरण करके ब्रह्माजी ने मुनियों के प्रति कथन किया, तब सब शास्त्रों और पुराणों की प्रवृत्ति हुई, जब समय पर पुराणों का अग्रहण देखकर कि इतना बड़ा ग्रंथ सब कैसे ग्रहण कर सकेंगे तब व्यास रूप धारण कर प्रभु प्रतिद्वापरयुग में उसको संक्षेप करते हैं, प्रतिद्वापरयुग में वह चार लाख प्रमाण के पुराण करके

उनके 18 भेद करते हैं। देवलोक में अब भी सौ कोटि श्लोकों में इतना विस्तार है इसी निमित्त चार लक्ष श्लोक वाले 18 पुराण इस समय कहे जाते हैं।

पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड में भी यही बात समर्थित हुई है कि –

पहले पुराणों से सब शास्त्रों की प्रवृत्ति हुई है और समयानुसार समस्त पुराण के ग्रहण में असमर्थ देखकर वह व्यासरूपी भगवान् ब्रह्मा युग युग में संग्रह के निमित्त चार लक्ष श्लोक के पुराण प्रत्येक द्वापरयुग में करते हैं। वह अठारह प्रकार के करके इस भूलोक में प्रकाशित होते हैं।

ब्रह्माण्डपुराण में भी इस प्रकार लिखा है कि –

> "पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम्। अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः।।"[3]

ब्रह्माजी ने सब शास्त्रों से प्रथम पुराण प्रगट किये, पीछे उनके मुख से वेद प्रगट हुए।

वैदिक ग्रन्थों में जिस बात की सूचना मात्र है। पुराणों में उसका विस्तार और परिणति दिखाई देती है उपाख्यानों की इस प्रकार विस्तृति और परिणति देखकर अनेक जन पुराणों को आधुनिक कहते हैं। वह ऐसा विश्वास करते हैं कि वैदिक ग्रन्थों में देवत्व का जिस प्रकार आभास है पुराणों में उसी ने भली – भाँति विस्तृत होकर बहुत स्थान लाभ किया है यहाँ तक कि पूर्वतन देवताविशेषों के अनेकानेक उपाख्यान पीछे रूपान्तरित और परिवर्द्धित करके पौराणिक विष्णु की महिमा प्रकाश के उद्देश्य से नियोजित हुए हैं यह हिन्दुशास्त्र के अनेक ग्रन्थों में प्रत्यक्ष पाया जाता है भक्तजनों ने दूसरे शोभायमान अलंकार अपहरण करके अपने – अपने इष्टदेव के निमित्त अभीष्ट शय्या बनाई है इस प्रकार के पुराणों में उन गाथाओं ने नवीन रूप धारण किया है और विस्तार पाया है।

विष्णु ने इस जगत् में तीन पद निक्षेप किये। सम्पूर्ण जगत् उनके धूरियुक्त पद द्वारा व्याप्त हो रहा है। दुर्धर्ष और समस्त जगत् के रक्षाकारी विष्णु ने धर्म की रक्षा के लिए पृथिवी आदि स्थानों में तीन पद निक्षेप किये हैं। निरुक्तकार के इन दोनों ऋचाओं की सूर्यकीर्तिरूप की व्याख्या करने पर भी शतपथ में इस प्रकार इसका स्पष्ट उपाख्यान वर्णित है।

देवता और असुर दोनों ही प्रजापति की सन्तान हैं। ये दोनों परस्पर विवाद करने लगे उनमें तीक्ष्ण स्वभाव वाले असुरों से देवता परास्त होकर असुरों के अधीन हुए, जब असुरों ने जाना कि सत्त्वगुण के अंशी देवता हमसे डरते हैं तब निर्भय हो उन्होंने यह बात मान ली कि यह सब जगत् हमारा है। तब उन असुरों ने कहा कि हम इस पृथिवी के हिस्से बाँटकर उसके द्वारा आजीविका निर्वाह करें तब उन्होंने वृषचर्मकी बहुत बारीक तांत बनाई। पश्चिम से पूर्व तक पृथिवी को नाप और विभाग करके अपनी करने लगे। जब देवताओं ने यह बात सुनी कि असुर इस पृथिवी का विभाग करते हैं तब इन्द्रादि देवता बोले जहाँ असुर विभाग कर रहे हैं वहाँ चलो यदि हमको उसका अंश नहीं मिलेगा तो हमारा क्या होगा ? तब देवता यज्ञरूप विष्णु को आगे करके वहाँ गये और बोले हमारे पीछे इस पृथिवी का विभाग मत करो कारण कि हमारा भी इसमें भाग होना चाहिए। देवताओं के यह वचन सुनकर वे सम्पूर्ण असुर खुनसाकर बोले अभी शीघ्रता न करो कि जब तब विष्णु जी सोचें तब तक हम सम्पूर्ण भूमि तुमको दे देंगे। हमको यज्ञ परिमित स्थान दिया है वो ठीक ही दिया है। फिर उन्होंने विष्णु को पूर्व दिशा में स्थापन करके छन्दों से परिवृत्त किया और कहा तुमको दक्षिण दिशा में गायत्री दिशाओं में छन्द से परिवेष्टित करके अग्नि को पूर्व दिशा में प्रतिष्ठित किया और पूजा व काम करते चलने लगे फिर विष्णु के द्वारा समस्त भुवन लाभ किया।

इस बात को प्रायः सब स्वीकार करते हैं कि पुराणों में अधिकांश उपाख्यान रूपक है उपर्युक्त जो वैदिक प्रसंग है वामन पुराण में यही उपाख्यान त्रिविक्रम नामक वामनावतार के प्रसंग में विस्तृत भाव से वर्णित हुआ है वामन पुराण में जाना जाता है कि भगवान् विष्णु ने एक से अधिक बार वामन रूप धारण किया था। त्रिविक्रम नामक वामनावतार में उन्होंने धुन्धु नामक महाअसुर को वंचित कर तीन पाद से समस्त भुवनों पर अधिकार किया था।

पुराणों में उपाख्यान की बाहुल्यता और विस्तार दिखाई देता है। इसी कारण पुराणों का प्रमाण कभी त्यागा नहीं जाता, केवल इतना ही अंश पुराणों में नहीं है। उनमें कर्म, उपासना और ज्ञानकाण्ड भी वेदानुकूल, बहुत स्पष्टता के साथ लिखा गया है जिसमें चातुर्वर्ण्य का उपकार होता है और धर्म के सदुपदेश प्राप्त होते हैं।

जो पाश्चात्य पंडित कहते हैं कि सौ कीर्ति और यश महिमा प्रतिपादक वैदिक उपाख्यानों से वैकुण्ठवासी विष्णु का बलि छलना और वामनावतार विषयक अद्भुत उपाख्यान की सृष्टि हुई है उनको यह जानना चाहिए कि यह आख्यान निरी कल्पना नहीं है ऐसा हुआ भी है निरे रूपक नहीं है। वेद के तीन प्रकार के कार्य नित्यसिद्ध हैं – आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक निरुक्त ने आधिभौतिक और शतपथ में आधिदैविक उपाख्यान वर्णन किया है इससे कोई नवीन कल्पना नहीं कही जाती, विभिन्न उपासना के विभिन्न पुराण जब कि यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सनातन से जब अनेक उपासक भिन्न – भिन्न देवताओं के भक्त हैं और वह एक ब्रह्म के ही रूपान्तर हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि हम जिससे प्राण के समान हित करते हैं उससे सब ही इसी प्रकार हित करें। यह किसकी इच्छा नहीं है जिस ऋषि ने जिस देवता की आराधना से अभीष्ट लाभ किया है वह जो उसकी भक्ति करेगा प्राण के समान उसका हित करेगा यह स्वभावसिद्ध है, दूसरे भी उसके इष्टदेव की श्रद्धा भक्ति करें, अपने समान देखें यह भक्तमात्र के ही हृदय की अभिलाषा है, इस प्रकार भक्ति अथवा प्रेम से एक ऋषि अथवा उसके अनुवर्ती शिष्य सम्प्रदाय से एक – एक देवता की उपासना का प्रचार दृढ़ किया गया है वह उस – उस देवता की उपासना के फलप्रतिपादक उपाख्यान एक ही पुराण में संकलित कर दिये हैं कर्म और ज्ञान के साथ सबका अभेद रहता है, जैसे शिवमहिमा के शिवपुराण में, विष्णु की महिमा के विष्णुपुराण में, देवी की महिमा के देवीभागवत् में इत्यादि वेद सर्वसाधारण की सम्पत्ति नहीं है। ऋत्विक, होता, उद्गाता इत्यादि विभिन्न याज्ञिकगणों की उपजीव्य सम्पत्ति हैं किन्तु इतिहास और पुराण साधारण नरनारियों की सम्पत्ति हैं प्राचीन आख्यान उपाख्यानादि वर्णन के बहाने से नानाविधि उपदेश देने और परमेश्वर में प्रीति उत्पन्न करने के निमित्त पुराणों की सृष्टि है।

ब्रह्माण्ड पुराण तथा मत्स्यादि में लिखा है :–

> यो विद्याश्चतुरो वेदान सांगोपनिषदो द्विजः।
> न चेत्पुराणं संविद्यान्नैव स स्याद्विचक्षणः।। [4]
> इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपवृंहयेत्।
> विभेत्यल्यपश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।। [5]
> यस्मात्पुरा ह्यनक्तीदं पुराणं तेन तत्स्मृतम्।
> निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते।। [6]

जिस ब्राह्मण ने अंग और उपनिषद् सहित भी चार वेद अध्ययन करके कभी पुराण अध्ययन नहीं किये वह पंडित नहीं हो सकता कारण कि इतिहास और पुराणों में ही अर्थसहित वेद का विस्तार किया है अधिक क्या पुराणादि ज्ञान विहीन अल्पज्ञ पुरुष से ही वेद भय करता है कारण कि ऐसा ही पुरुष वेद का अपमान करता है यह अत्यन्त प्राचीन और वेद का निरुक्तस्वरूप होने से इसका नाम पुराण हुआ है जो इसको जानते हैं वह सब पापों से छूट जाते हैं।

जो जिस देवता के भक्त हैं वह अपने देवता के महात्म्य प्रकाशक पुराण का विशेष आदर करते हैं, बलिद्वीप के ब्राह्मण विशेषकर शैव हैं वह शिवमहात्मयप्रकाशक ब्रह्माण्डपुराण को अतिगुह्यशास्त्र जानकर उसकी रक्षा करते हैं। पूर्वकाल में कुछ ऐसा नियम था कि लोग अपनी ही उपासना और सम्प्रदाय के ग्रन्थ देखा करते थे इससे दूसरी उपासना से उनका कुछ प्रयोजन न था और इसी कारण वे इसको सर्वोत्कृष्ट समझते थे, भिन्न – भिन्न उपासकों के

सम्प्रदाय की जो वस्तु हैं भविष्यपुराण में उसका कुछ आभास पाया जाता है, यथा :–

जयोपजीवो यो विप्रः स महागुरुरुच्यते।
विष्णुधर्मादित्यधर्माः शिवधर्माश्च भारत।। [7]
काष्र्यं वेद पंचमं तु यन्महाभारतं स्मृतम्।
सौराश्च धर्मा राजेन्द्र नारदोक्ता महीपते।। [8]
जयेति नाम एतेषां प्रवदन्ति मनीषिणः।। [9]

जय जिसकी उपजीविका है वह ब्राह्मण महागुरु कहा जाता है। हे भारत ! अष्टादश पुराण, रामचरित, विष्णु धर्म, आदित्य धर्म, शिव धर्म वा पंचमवेद स्वरूप महाभारत और नारद कथित और गणों का धर्म यह भविष्यपुराण में कीर्तित हुआ है, बुद्धिमान् इतने ग्रंथों का जयनाम से निर्देश करते हैं।
इस प्रसंग से भली – भाँति विदित होता है उपासकों के भेद से पुराण भी भिन्न – भिन्न देवताओं की भक्ति के पोषक है।
स्कन्दपुराण के केदारखण्ड में स्पष्ट लिखा है कि :–

"अष्टादशपुराणेषु दशभिर्गीयते शिवः।
चतुर्भिभगवान् ब्रह्मा द्वाभ्यां देवी तथा हरिः।।" [10]

अठारह पुराणों में दश में शिव, चार में भगवान् ब्रह्मा, दो में देवी और दो में हरि के गुण कथन किये गये हैं।
शिव, भविष्य, मार्कण्डेय, लिंग, वाराह, स्कन्द, मत्स्य, कूर्म, वामन और ब्रह्माण्ड यह दशपुराण शैव हैं। इन दशों की श्लोक संख्या तीन लाख है इन सभी ग्रन्थों में शिव की महिमा प्रकाशित हुई है। विष्णुपुराण, भागवत, नारदपुराण, गरुड़पुराण यह चार पुराण वैष्णव हैं इस कारण यह विष्णु की महिमा करते हैं ब्राह्म और पाद्म यह दो पुराण ब्रह्मा की महिमा करते हैं केवल एक अग्निपुराण अग्नि की और ब्रह्मवैवर्तपुराण सविता की महिमा का प्रकाश करने वाला है।
इस प्रकार यह अठारह पुराण हैं, चार वैष्णवपुराणों में महादेव और विष्णु की साम्यता कही है, इससे विदित है कि ब्रह्मादि की अपेक्षा जगत्पति विष्णु भगवान् को अधिक माना है ब्रह्मपुराण में ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीनों का एक साथ वर्णन होने से सबकी अपेक्षा ब्रह्माजी को श्रेष्ठ कहा है और सूर्यदेव को ब्रह्माविष्णु शिवात्मक कहा है।
अष्टादश पुराणों का मुख्य उद्देश्य ब्रह्मा, विष्णु, शिव इस त्रिमूर्ति की उपासना का प्रचार विशेषतः शिव, विष्णु और उनकी शक्तियों की महिमा का संकीर्तन और उनकी पूजा का प्रचार है एवं पुराणों का मुख्य लक्ष्य वेद वेदान्त के कर्म, ज्ञान और उपासना काण्ड को मनुष्यों के हृदयंगम करके चारों वर्णों को सुमार्ग पर चलाकर मोक्ष का भागी बनाना है।

सन्दर्भ सूची

1. शतपथ ब्राह्मण
2. ऐतरेय ब्राह्मण
3. ब्रह्माण्डपुराण
4. ब्रह्माण्ड पुराण
5. ब्रह्माण्ड पुराण
6. ब्रह्माण्ड पुराण
7. भविष्यपुराण
8. भविष्यपुराण
9. भविष्यपुराण
10. स्कन्दपुराण